VIDYA BHAWAN BALIKA VIDYA PITH

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय बिहार

Class 12 Sub. Music. Date 05.01.2021

Teacher name – Barun maji

Sangeet parijaat / संगीत पारिजात

- यह ग्रंथ पंडित अहोबल द्वारा सन् 1650 में लिखा गया है यह अपने काल का प्रतिनिधि ग्रन्थ माना जाता है क्योंकि यह कई दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इनके बाद के ग्रन्थाकारों में पं० अहोबल की छाया दिखती हैं। अहोबल ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने संगीत पारिजात में वीणा पर स्वरों का स्थान निश्चित करने के लिए एक नवीन पद्धति अपनाई। इस पद्धति के द्वारा साधारण व्यक्ति भी स्वर की स्थापना सही ढंग से कर सकता है।
- यह ग्रंथ मंगलाचरण से प्रारंभ होता है। इसके बाद स्वर, ग्राम, मुर्छना, स्वर-विस्तार, वर्ण, जाति , समय और राग प्रकरण(अध्याय) में संगीत के पारिभाषिक शब्दों और अन्य बातों पर विचार किया गया है।
- स्वर प्रकरण के अन्तर्गत अहोबल ने बताया है कि ह्दय स्थित अनाहत चक्र में वायु और अग्नि के संयोग से आहत नाद की उत्पत्ति होती है। आगे उन्होंने बताया है कि नाद दो प्रकार के होते हैं आहत नाद और अनाहत नाद। स्वर और श्रुति में सर्प और उसकी कुण्डली सा भेंद है। परम्परा का पालन करते हुए श्रुति की संख्या और उनके नाम बताया। उसने बाईस श्रुतियों को पांच भेदों में बाटा- दीप्ता, आयता, करूणा, मृदु और मध्या। सा- म को ब्राह्मण , रे- ध को क्षत्रिय, और ग- नि वैश्य कहा। आगे उन्होंने स्वरों की जन्म भूमि, उनके रंग और रस बताया। ग्राम प्रकरण के अन्तर्गत उसने षडज, मध्यम और गंधार इन तीनों ग्रामों के स्वरूप का वर्णन किया है।
- मूर्छना प्रकरण के अन्तर्गत्त मूर्च्छना की परिभाषा देते हुये उसने केवल षडज ग्राम की मूर्छनाओं का वर्णन किया है। मध्यम और गंधार ग्राम की मूर्छनाओं को बिल्कुल छोड़ दिया है। शुद्ध स्वरों से सात मूर्छनाएं बन सकती है, किन्तु उसने विकृत स्वरों से भी सम्पूर्ण जाति की मूर्छनाओं की रचना की है। इसके बाद से उसने षडज ग्राम की शुद्ध और विकृत स्वरों की मूर्छनाओं की रचना की। इन सब को मिला देने से उसने बताया की केवल षडज ग्राम से 4 लाख, 20 हजार, 1 सौ 20 मूर्छनाओं की रचना हो सकती है।

- स्वर प्रस्तार प्रकरण के अन्तर्गत उसने सातों स्वर के संयोग से 4 हजार 2 सौ 20 स्वर समूह की रचना को बताया है। वर्णलक्षणम अध्याय के अन्तर्गत वर्ण की परिभाषा बताते हुए वर्ण के चार प्रकार बताये है- स्थायी, आरोही, अवरोही और संचारी। अलंकार की परिभाषा इस प्रकार दी है ' क्र स्वरसंदर्भमलकारं प्रचक्षते'। अलंकार के कई प्रकार बताये है जैसे- मृदु, नन्द, विस्तीर्ण, जित, सोम, बिन्दु,ग्रीव, भाल, वेणी, प्रकाशक आदि। स्थाई वर्ण के 7, आरोही वर्ण के 12, अवरोही वर्ण के भी 12, सचारी के वर्ण 25 कुल मिलाकर 56अलंकार बताये है। इनके अतिरिक्त पं० अहोबल ने 5 अलंकार और बताये है। इन सभी अलंकार के नाम, लक्षण, और उदाहरण संगीत पारिजात में दिये गए हैं। मंद्र सप्तक के लिये ऊपर बिन्दु और तार सप्तक के लिये खडी रेखा अंकित किया है।
- गमक प्रकरण में 7 शुद्ध जातियांद्यषडजा, आर्षभी, गंधारी, मध्यमा, पंचमी, धैवती और निषादी का संक्षिप्त परिचय दिया गया है, कंपित, प्रत्याहत, स्फुरित, घर्षण,हुम्फित आदि गमको को समझाया गया है।
- समय प्रकरण के अन्तर्गत वीणा पर स्वरों की स्थापना बताई गई है। 5 प्रकार गीतिया मानी है और उनके लक्षण दिये गये है। आगे 1 सौ 25 रागों का गायन समय और परिचय बताया गया है। अहोबल ने आगे स्पष्ट रूप से लिखा है राग तो बहुत से माने गये है किन्तु 125 उपयोगी रागों का वर्णन किया गया है। संगीत पारिजात में कुल 500 श्लोक है।